रोजे की प्रकृति में ही सब्र यानी धीरज है। धीरज और सहनशीलता ही व्यक्ति को दिल के करीब ले जाते हैं और उसे अल्लाह की निकटता का अहसास होता है। सब्र ही वह जमीन है, जिस पर दुआ का मुबारक पेड़ उगता है।

आध्यात्मिक संकल्प मजबूत करना ही रोजे का उद्देश्य

▪ मौलाना वहीदुद्दीन
इस्लाम और अध्यात्म के विद्वान

मुस्लिमों के लिए उपवास का माह रमजान खास और मुबारक महीना है। इसी माह में पैगंबर हजरत मोहम्मद को कुरान उजागर होना शुरू हुई थी। यह संयम व साधना, दूसरों की देखभाल व धन्यता की भावना, पश्चाताप व पवित्रता का माह है।

रमजान आध्यात्मिक सक्रियता का वक्त है, जब आस्थावान लोग अपनी आध्यात्मिकता जागृत करते हैं। रोजे का मुख्य उद्देश्य भौतिक चीजों पर मानव की निर्भरता को कमजोर करना और उसके आध्यात्मिक संकल्प को मजबूत करना है ताकि वह पवित्रता के उच्चतर स्तर में प्रवेश करे। हजरत मोहम्मद ने रमजान के महीने को तीन भागों में बांटा है। पहले दस दिन को उन्होंने 'मुबारक' कहा है। अगले दस दिन 'क्षमा' और अंतिम दस दिन 'दोजख की आग से मुक्ति' के हैं। उन्होंने यह भी कहा है, 'इस दुनिया में अंतिम दस दिन सर्वश्रेष्ठ है।'



रोजे की प्रकृति में ही सब्र यानी धीरज है। धैर्य और सहनशीलता ही व्यक्ति को दिल के करीब ले जाते हैं और उसे अल्लाह की निकटता का अहसास होता है। सब्र ही वह जमीन है, जिस पर दुआ का मुबारक पेड़ उगता है। दुआ सिर्फ मौखिक कार्य नहीं है। मूल रूप से यह दिल का कृत्य है। इससे रोजे और दुआ का संबंध स्पष्ट होता है। सच्चा रोजा वह है, जो असली दुआ को प्रेरित करे।

इस्लाम के मुताबिक मानव को दुनिया में लाया ही इसलिए गया है कि उसकी परीक्षा हो सके। उसे आज़ादी इसलिए दी गई है कि वह अपनी इस आज़ादी का उपयोग ईश्वरीय आज्ञा का पालन करने में कर सके। जीवन की इस परीक्षा में कामयाब होने के लिए मानव को अपनी इस आज़ादी का इस्तेमाल सीमित करना होगा। उसे उस सब को बढ़ावा देना है, जो अच्छा है और उसे खत्म करना है, जो बुरा है। इसके लिए आत्म नियंत्रण-जरूरी होता है। रमजान का महीना यह आत्म-नियंत्रण हासिल करने की सालाना ट्रेनिंग है। व्यक्ति में इस आत्म-नियंत्रित जीवन के लिए सब्र होना चाहिए। उपवास से व्यक्ति में सब्र की इस भावना का विकास होता है। इसीलिए इसे सब्र का माह भी कहा गया है। दुनिया में इस्लामी जीवन जीने का सबसे महत्वपूर्ण गुण है सब्र।

रमजान के दौरान इस्लामी समुदाय में एक नाटकीय परिवर्तन आता है। श्रद्धालु मस्जिद के भीतर कुरान पढ़ते हुए, दुआ और अल्लाह की याद में डूबे हुए दिखाई देते हैं। वे अधिक निलिप्त और विचारशील हो जाते हैं। उनकी प्रबल कामनाओं पर अंकुश लग जाता है। मानव सामाजिक प्राणी है। अपने आसपास के वातावरण से वह प्रोत्साहित होता है या हताश होता है। सामुदायिक जीवन में रमजान के दौरान आया यह परिवर्तन व्यक्तिगत स्तर पर भी प्रभावित करता है। वह अपने भाइयों में आए परिवर्तन से प्रोत्साहित होता है और अधिकाधिक अल्लाह की ओर बढ़ता है। उसमें शराब पीने जैसी आम बुराइयां घटती हैं, चोरी की घटनाएं कम हो जाती है और यहां तक कि टीवी देखना भी घट जाता है। रहवासी इलाकों में ही नहीं बाजारों तक में शांति का माहौल बन जाता है। ये सारे बदलाव नैतिक सुधार के लिए अच्छा वातावरण निर्मित करते हैं। बुरा घटता है, अच्छा बेहतर हो जाता है।

कुरान बताती है कि रोजा रखने को इसलिए कहा गया है ताकि तुम अल्लाह से डरो। इसका मतलब क्या है? ईश्वर से डरने का मतलब है कि मानव का अल्लाह की महानता के सामने अपनी असहायता को स्वीकार करना। यह भावना किसी व्यक्ति के जीवन में सबसे बड़ी प्रेरक ताकत है। अध्यात्म की सर्वोच्च स्थिति यही है कि व्यक्ति को अपनी असहायता और अल्लाह की सर्वोच्च शक्ति का अहसास हो। व्यक्ति की आध्यात्मिक वृद्धि में सबसे बड़ी बाधा तो उसका अहंकार और घमंड है। आध्यात्मिक रूप से शुद्ध व्यक्ति की एकमात्र चिंता यही होती है कि वह सर्वशक्तिमान की मर्जी से कैसे चले।